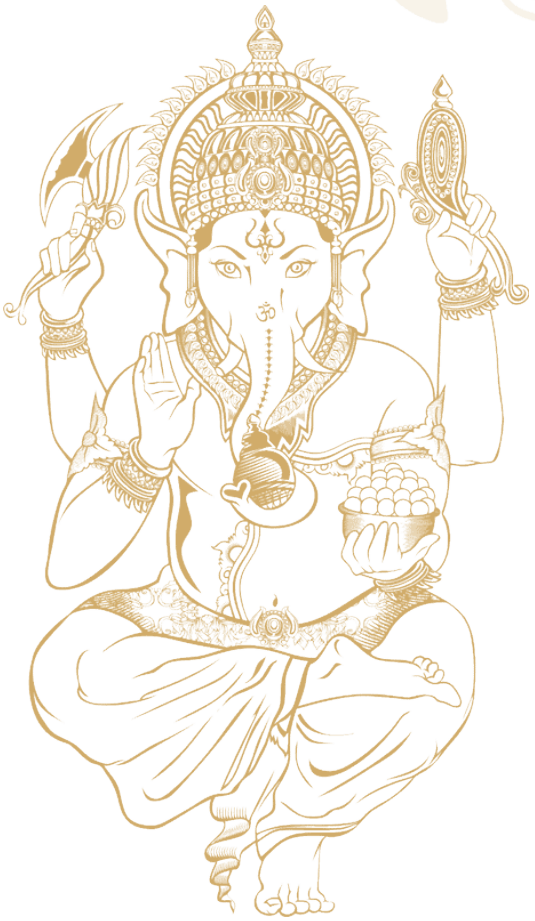

Girl

10 Sep 2025

12:25 PM

Ludhiana

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119411501**

तिथि 10/09/2025 **समय** 12:25:00 **वार** बुधवार **स्थान** Ludhiana **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:01
अक्षांश 30:56:00 उत्तर **रेखांश** 75:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	: 11:16:44 घं	गण	: देव
वेलान्तर	: 00:03:01 घं	योनि	: गज
सूर्योदय	: 06:07:56 घं	नाड़ी	: अन्त्य
सूर्यास्त	: 18:38:26 घं	वर्ण	: विप्र
चैत्रादि संवत	: 2082	वश्य	: जलचर
शक संवत	: 1947	वर्ग	: सिंह
मास	: आश्विन	युँजा	: पूर्व
पक्ष	: कृष्ण	हंसक	: जल
तिथि	: 3	जन्म नामाक्षर	: ची-चित्रलता
नक्षत्र	: रेवती	पाया(रा.-न.)	: रजत-स्वर्ण
योग	: वृद्धि	होरा	: शुक्र
करण	: विष्टि	चौघड़िया	: रोग

विंशोत्तरी	
बुध 2वर्ष 9मा 26दि	
बुध	
10/09/2025	
06/07/2028	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/09/2025
गुरु	27/10/2025
शनि	06/07/2028

योगिनी	
उल्का 0वर्ष 11मा 28दि	
उल्का	
10/09/2025	
09/09/2026	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/09/2025
भ्रामरी	08/11/2025
भद्रिका	09/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			13:06:00	वृश्चिक	अनुराधा	3	शनि	राहु	---	0:00			
सूर्य			23:37:00	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	स्वराशि	1.73	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			27:47:14	मीन	रेवती	4	बुध	गुरु	सम राशि	1.05	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			27:46:17	कन्या	चित्रा	2	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	0.97	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	20:42:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	1.18	ज्ञाति	ज्ञाति	विपत
गुरु			25:15:18	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.33	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			24:32:39	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	1.32	मातृ	कलत्र	जन्म
शनि	व		05:08:01	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.85	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		24:07:04	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		24:07:04	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

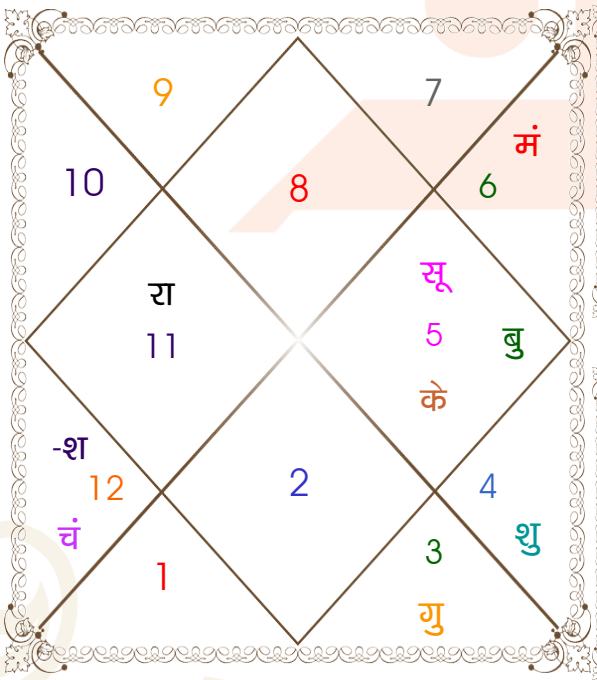

चन्द्र कुंडली

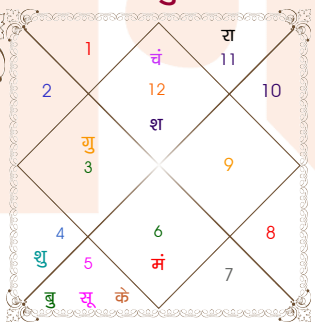

नवमांश कुंडली

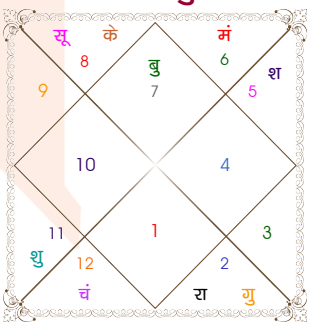

सर्वाष्टकवर्ग

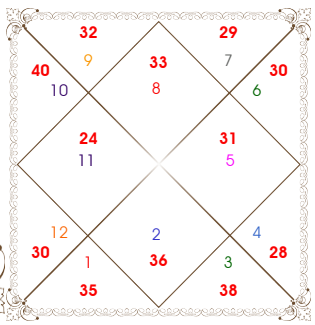

दशमांश कुंडली

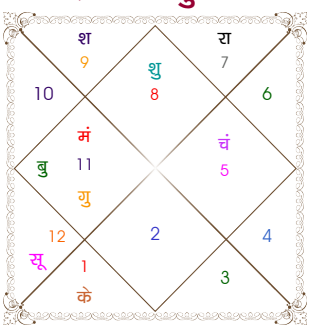

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, गण देव तथा योनि गज होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ची" या "चि" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से अच्छे स्वभाव की महिला होंगी तथा समाज में अन्य लोगों से आपका अत्यन्त ही मधुर व्यवहार रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप हमेशा धन सम्पति से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इन्द्रियों को आप पूर्ण वश में रखेंगी तथा लौकिक जीवन संयमपूर्वक व्यतीत करेंगी। इससे आपके मन में अनावश्यक इच्छाओं की उत्पति नहीं होगी। आप में ईमानदारी का गुण विद्यमान रहेगा एवं आपके अधिकांश कार्य इसी गुण से सम्पन्न होंगे। साथ ही बुद्धि से भी आप निर्मल रहेंगी तथा व्यापारादि कार्यों में शुद्ध रूप से लाभार्जन के लिए उत्सुक रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी एवं धनाढ्य महिला के रूप में भी ख्याति अर्जित करेंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप के सभी अंग सम्पूर्ण एवं सुन्दरता से युक्त रहेंगे। इससे आपका सौन्दर्य आकर्षक बना रहेगा। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रियता अजित करेंगी तथा सबको यत्नपूर्वक सहायता प्रदान करती रहेंगी। शौर्योचित गुणों से आप सर्वदा युक्त रहेंगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप का हृदय निर्मल होगा तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव रहेगा।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

जीवन में विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में आप हमेशा निपुण रहेंगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। आपको विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा समाज में एक विदुषी के रूप में भी आप की प्रसिद्धि रहेगी। इसके अतिरिक्त आप नाना प्रकार के वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपके जानु भाग में कोई चिन्ह या निशान भी अकित हो सकता हैं। आप सलाह आदि देने के कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष होंगी तथा इससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपका पूर्ण आदर तथा सम्मान करेंगे। आप सुन्दर पति तथा गुणसम्पन्न पुत्रों से युक्त रहेंगी एवं आपके मित्र भी प्रायः शिक्षित तथा गुणवान ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप दृढ संकल्पी होंगी एवं स्थिर धन सम्पत्ति से भी सुशोभित रहेंगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

मीन राशि में पैदा होने के कारण आपका सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत तथा नासिका ऊंची रहेगी। साथ ही आपकी आखें भी देखने में अति सुन्दर तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। आपका कटिभाग भी क्षीण रहेगा। चित्रकारी या शिल्प के प्रति आप स्वभाव से ही रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में आशातीत सफलता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। संगीत शास्त्र में भी आपका हार्दिक आकर्षण रहेगा तथा इसका ज्ञानार्जन करने के लिए

भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। कई प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा एवं समाज में एक विदुषी के रूप में आपका यश व्याप्त रहेगा। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी। पुरूषवर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। आप अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप में क्रोध की अल्पता ही रहेगी तथा राजकीय सेवा में आप नियुक्त होंगी। खान या पृथ्वी के अन्दर से निकाले गए पदार्थो से आप विशेष लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। पति को आप हमेशा अपने पूर्ण नियंत्रण में रखेंगी तथा वे सभी सांसारिक कार्य आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव सुशील रहेगा तथा अन्य जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने के प्रति आपकी तीव्र इच्छा रहेगी तथा इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए नित्य उत्सुक रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में दानशीलता का भाव भी रहेगा तथा यथाशक्ति इसका अनुपालन भी जीवन में करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से उत्पन्न पदार्थो तथा मोती शंख आदि रत्नों से सुशोभित रहेंगी तथा व्यापार आदि में इनसे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की सम्पत्ति को भी प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप हमेशा सुन्दर आकर्षक एवं नवीन वस्त्रों के लिए लालयित रहेंगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए सर्वदा तत्पर एवं उत्सुकता का प्रदर्शन करेंगी। इसके साथ ही आप का शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप जल का अधिक मात्रा में उपयोग करेंगी तथा दिन में कई बार इसको पीने की इच्छा करेंगी। आप अपने पति के ऊपर पूर्ण विश्वास रखेंगी तथा उनसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगी। अतः आपका पारिवारिक जीवन सुख तथा आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। आप उत्तम श्रेणी की विदुषी होगी तथा कृतज्ञता के सद्गुण से सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक धन्यवाद भी करेंगी। साथ ही आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके कई महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।

विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक जितेन्द्रिय महिला होंगी तथा संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी इससे आपके मन में अनावश्यक इच्छाओं की उत्पति का अभाव रहेगा। आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से कार्य सम्पन्न करेंगी। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी एवं इससे आप अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आप निर्मल बुद्धि से युक्त रहेंगी तथा अन्य जनों से कोई धोखा आदि नहीं करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप उदरपोषण संबंधी कार्यों में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी तथा कभी कभी लाभ मार्ग अवरूद्ध होने के कारण आर्थिक कठिनाई से परेशानी की अनुभूति होगी। आप कान्तिमय शरीर से युक्त रहेगी तथा इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होती रहेगी। पिता से आप पूर्ण धन सम्पति अर्जित करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आप में साहस का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा पराक्रमी एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए आप नित्य तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में संतोष का भाव भी रहेगा तथा जो कुछ भी उपलब्ध होगा उसी में सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति से युक्त रहेंगी तथा शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा सभी लोग आपका उचित मान सम्मान करेंगे लेकिन कंजूसी की प्रवृति होने के कारण आपके संबंधी या मित्र आपसे कभी कभी अप्रसन्न रहेंगे। अपने परिवार या कुल में आप सर्वप्रिय रहेंगी तथा सभी पारिवारिकजन आपको स्नेह तथा सम्मान प्रदान करते रहेंगे। सेवा कार्यों में भी आप प्रवृत रहेंगी तथा इन कार्यों को करने में आप मानसिक संतुष्टि प्राप्त करेंगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगी। साथ ही आपका चाल चलन श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग से आपका विशेष अनुराग रहेगा।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।

मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य, व्यक्तित्व तथा विद्धता से आप समाज में एक सम्माननीय महिला होंगी तथा अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन प्रसन्नता एवं सुख से व्यतीत करेंगी।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रिय रहेगी एवं सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी। अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को सादगी से ग्रहण करने की आपमें प्रतिभा रहेगी दूसरे लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे व्यक्ति की पहचान करने में आप हमेशा सफल रहेंगी। इसके साथ ही आप भी स्वयं महान विद्वानों द्वारा वणित सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपको थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से आप सुशोभित रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर होगा तथा दानशीलता की प्रवृति से आप सुसम्पन्न रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा हमेशा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए तत्पर रहेंगी। अनावश्यक दिखावे या भौतिकता की आप उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त एक महान विदुषी के रूप में भी समाज में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप राजप्रिय अर्थात् उच्चाधिकार वर्ग के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। अतः आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सरलतापूर्वक सिद्ध होते रहेंगे। आप में शारीरिक बल भी सम्पूर्ण रहेगा एवं कई कार्य आप स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगी। आप जीवन में कई प्रकार के सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं उनका उपभोग करेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त आप एक उत्साही महिला होंगी तथा नित्य उत्साह से सम्पन्न रहकर अपने सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव

उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की उपासना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत पुखराज, पीत वस्त्र, सोना, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आप के समस्त चिन्ताएं दूर होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।